Post-graduate Department of Hindi
THE UNIVERSITY OF KASHMIR SRINAGAR

Syllabus for Entrance Test for Integrated Ph.D

PHDHIN-01	**History of Hindi Literature** हिन्दी साहित्य का इतिहास
PHDHIN-02	**Madhykaleen kavya** मध्यकालीन काव्य
PHDHIN-03	**Criticism** काव्यशास्त्र
PHDHIN-04	**Aadhunik Kavita** आधुनिक कविता
PHDHIN-05	Katha-sahitya कथा-साहित्य
PHDHIN-06	**Hindi Natak** हिन्दी नाटक
PHDHIN-07	**Pryojanmulak Hindi Avam JanSanchar, Jan Madiam** प्रयोजनमूलक हिन्दी एवं जन-संचार, जन माध्यम

Note:

- There shall be single Entrance Test paper with three parts having the following break up:
  (i). Part-I. General Aptitude with emphasis on logical reasoning, graphical analysis, analytical and numerical ability , quantitative comparisons, puzzles etc.
  (ii). Part-II. Basic (conventional) questions on core papers.
  (iii). Part-III. Advanced (higher value questions) questions on Core papers.
- The question paper shall have 100 MCQ's with 1 mark each with no negative marks. Break of questions in
  the questions in the question paper shall be as follows:
  (i). Part-I 20
  (ii). Part-II 30
  (iii). Part-III 50

(Paper-I)

Title: हिन्दी साहित्य का इतिहास

History of Hindi Literature

- हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन के आधार एवं साहित्येतिहास लेखन की परम्परा
- हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल- विभाजन, विभिन्न मत एवं निष्कर्ष
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टि:
- आदिकाल की सामाजिक परिस्थितियां, नामकरण, साहित्यिक विशेषताएं

  (सिद्ध, नाथ, जैन एवं लौकिक साहित्य)
- रासो साहित्य की परम्परा
- अपभ्रंश साहित्य का हिन्दी पर प्रभाव
- आदिकालीन गद्य साहित्य
- भक्ति आन्दोलन का उदभव और विकास
- भक्तिकाल की विभिन्न काव्यधाराएं,संत काव्य, सूफी काव्य, राम काव्य, कृष्ण काव्य के प्रतिनिधि कवियों तथा उनके साहित्य की विशेषताएं
- निर्गुण भक्ति एवं सगुण भक्ति में अन्तर एवं समानताएं
- रीतिकालीन का नामकरण, रीतिकालीन कवियों के विविध वर्ग तथा उनकी साहित्यिक विशेषताएं- रीतिसिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त
- रीतिकाल के प्रमुख कवि- देव, आलम, बिहारी, रसखान, घनानन्द, रहीम
- रीतिकालीन श्रृंगारेत्तर काव्य
- आधुनिक काल की सामान्य परिस्थितियां
- फोर्ट विलियम कॉलेज और खड़ी बोली हिन्दी का उदभव एवं विकास
- भारतेन्दु युग- प्रमुख साहित्यकार सामान्य साहित्यिक विशेषताऐं
- भारतीय नवजागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन
- द्विवेदी युग – प्रमुख रचनाकार

- प्रमुख साहित्यिक विशेषताएं
- छायावाद – प्रमुख कवि एवं सांस्कृतिक विशेषताएं
- स्वच्छन्दतावाद
- प्रगतिवाद - विकास एवं विशेषताएं
- प्रयोगवाद - विकास एवं विशेषताएं
- नई कविता - प्रमुख साहित्यकार,रचनाएं और सामान्य साहित्यिक विशेषताएं
- समकालीन कविता
- कहानी - विकास एवं परम्परा
- उपन्यास - ऐतिहासिक विकास एवं वर्गीकरण
- नाटक - ऐतिहासिक विकास एवं नया रूप
- निबन्ध - विकास एवं परम्परा
- आलोचना - परम्परा एवं विकास

(Paper-II)

Title : मध्यकालीन काव्य

Madhykaleen kavya

- कबीर की भक्ति- भावना, समाज- दर्शन, काव्य- भाषा, रहस्यवाद
- जायसी का विरह- वर्णन, रहस्यवाद, प्रेम- व्यंजना, महाकाव्यत्व
- सूरदास की भक्ति-पद्धति, वात्सल्य- भावना, श्रृंगार पक्ष, रीति तत्व
  - तुलसी की भक्ति भावना,
  - समन्वयवाद
  - लोकमंगल
  - काव्य- सौन्दर्य
  - बिहारी की बहुज्ञता,
  - श्रंगार- पक्ष,
  - काव्य- सौष्ठय,
  - सतसई परंपरा में बिहारी सतसई का स्थान
  - घनानन्द का विरह- वर्णन,
  - प्रेम- व्यंजना,
  - काव्य- दृष्टि,
  - छंद- योजना

(Paper-III)

Title: काव्यशास्त्र

Criticism

- काव्य-लक्षण
- काव्य-प्रयोजन, काव्य-हेतु
- काव्य-दोष
- रस- सम्प्रदाय (रस स्वरूप, रस के अंग, रस- निष्पत्ति एवं साधारणीकरण)
- अलंकार-सम्प्रदाय (अलंकार स्वरूप, विशेषता, प्रभेद, चमत्कारवाद)
- ध्वनि सम्प्रदाय
- ध्वनि का अर्थ
- ध्वनि- प्रभेद
- ध्वनि-काव्य
- ध्वनि सिद्धान्त की स्थापनाएं व काव्य की आत्मा
- औचित्य-सम्प्रदाय
- वक्रोक्ति- सम्प्रदाय
- रीति- सम्प्रदाय
- सहृदय व सौन्दर्य की अवधारणा
- प्लेटो और अरस्तु ः प्रत्यय सिद्धान्त , अनुकृति सिद्धान्त , विरेचन सिद्धान्त , त्रासदी
- लोंन्जाइन्स का उदात्त तत्व
- वर्डसवर्थ का काव्य-भाषा सिद्धान्त
- कोलरिज ः कल्पना-सिद्धान्त
- इलियट ः परम्परा,इतिहास व निर्वैयक्तिकता सिद्धान्त
- रिचर्डस ः काव्य भाषा-सिद्धान्त व मूल्य-सिद्धान्त
- क्रोचे ः अभिव्यंजनावाद,स्वच्छन्दतावाद,मार्क्सवाद
- अस्तित्ववाद
- मनोविश्लेषणवाद
- बिम्बवाद
- प्रतीकवाद व आलोचना की नयी अवधारणाएँ - आधुनिकता,उत्तर आधुनिकता
- विडम्बना, अजनबीपन, विसंगति, अन्तरविरोध, समलिंगता

(**Paper-IV)**

Title: आधुनिक कविता

Aadhunik Kavita

- द्विवेदी युग की साहित्यिक विशेषताएं
- मैथिलीशरण गुप्त का काव्य शिल्प
- साकेत में उर्मिला के विरह- वर्णन का स्वरूप
- साकेत के आधार पर पुरातनता और नवीनता का द्वन्द्व
- आधुनिक सन्दर्भ में कामायनी की प्रासंगिकता
- "कामायनी" महाकाव का शिल्प
- "कामायनी" में छायावादी तत्व
- "कामायनी" में दर्शन
- हिन्दी काव्य में निराला का योगदान
- निराला के काव्य में नारी
- "राम की शक्ति पूजा"का महाकाव्यात्मक औदात्य
- समकालीन काव्य में 'नदी के द्वीप' का महत्व

(Paper-V)

Title: कथा-साहित्य

Katha-sahitya

- गोदान ग्रामीण जीवन का दस्तावेज़
- गोदान में पात्रों का चरित्र- चित्रण
- गोदान का महाकाव्यत्व
- वर्तमान युग में गोदान की प्रासंगिकता
- हिन्दी उपन्यास तथा बाणभट्ट की आत्मकथा
- वस्तु संगठन की दृष्टि से बाणभट्ट की आत्मकथा
- बाणभट्ट की आत्मकथा में पात्रों का चरित्र- चित्रण
- बाणभट्ट की आत्मकथा में लेखक का उद्धेश्य
- आंचलिक उपन्यास के तत्वों के आधार पर मैला आंचल
- मैला आंचल में पात्रों का चरित्र- चित्रण
- मैला आंचल का नायक
- मैला आंचल की भाषा- शैली

निम्नलिखित कहानीकारों का युगबोध-

- प्रेमचन्द
- जयशंकर प्रसाद
- जैनेन्द्र
- यशपाल

निम्नलिखित कहानीकारों की कहानी – कला का अध्ययन -

- मन्नू भण्डारी
- मीरा कान्त
- कमलेश्वर
- ओमप्रकाश वाल्मीकि

हिन्दी कहानी की प्रवृत्तियां –

- नई कहानी
- अकहानी
- संचेतन कहानी
- समान्तर कहानी

(Paper-VI)

Title: हिन्दी नाटक

Hindi Natak

- नाटक की परिभाषा और तत्व
- नाटक का उदभव और विकास
- आधुनिक नाटक और रंगमंच के विकास पर पाश्चात्य प्रभाव
- तत्वों के आधार पर प्राचीन एवं आधुनिक नाटक की तुलना
- प्रसाद के नाटकों का कथ्य और शिल्प
- रंगमंच की दृष्टि से प्रसाद के नाटकों का मूल्यांकन
- चंद्रगुप्त नाटक की रंगमंचीयता
- चंद्रगुप्त नाटक में इतिहास और कल्पना
- नाट्य साहित्य में लक्ष्मीनारायण लाल का योगदान
- डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल की नाट्य-कला
- "कर्फ्यू" नाटक के शीर्षक की सार्थकता
- "कर्फ्यू" नाटक का शिल्प-विधान
- समकालीन नाटक और मोहन राकेश
- "आधे अधूरे" नाटक की मूल समस्या
- आधे अधूरे नाटक की रंगमंचीयता
- नाट्य-काव्य परंपरा में धर्मवीर भारती का स्थान
- नाट्य- काव्य के तत्वों के आधार पर "अंधा युग" का मूल्यांकन
- "अंधा युग" नाटक में प्रतीक- योजना एवं आधुनिकता
- "संशय की एक रात"नाटक के शीर्षक की सार्थकता
- नरेश मेहता की संवेदना
- "संशय की एक रात"नाटक का नाट्य- शिल्प

(Paper-VII)

Title ः प्रयोजनमूलक हिन्दी एवं जन-संचार

Pryojanmulak Hindi Avam JanSanchar

- प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप एवं परिभाषा
- प्रयोजनमूलक हिन्दी की आवश्यकता एवं विशेषताएं
- हिन्दी के विविध रूप ः राष्टभाषा राजभाषा संपर्क भाषा मानक भाषा
- राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति
- रोज़गार के क्षेत्र में हिन्दी
- वर्तमान मीडिया में हिन्दी
- विज्ञापन की तकनीक एवं भाषा
- कार्यलयी हिन्दी के प्रमुख प्रकार – प्रारूपण,टिप्पण,प्रतिवेदन,कार्यलयी-पत्र
- जन संचार- अर्थ, व्याख्या एवं प्रकार
- रेडियो के क्षेत्र में भाषा की प्रकृति
- तान अनुतान की समस्या तथा बलाघात की समस्या
- समाचार पठन एवं भाषा का वैयक्तिकरण
- मानक उच्चारण
- आंगिक एवं वाचिक अभिव्यक्ति
- दृश्य माध्यम में प्रस्तुतीकरण की स्वाभाविकता
- दृश्य माध्यम में दृश्य-श्रव्य एवं संगीत का तालमेल